RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक : 2
सृष्टि संवत् 1960853113
14 अप्रैल 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 2, 11/14 अप्रैल 2013 तदनुसार 2 वैशाख सम्वत् 2069 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

प्रभु स्मरण से विजयी बनो

-ले० अशोक आर्य शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी, ज़िला गाजियाबाद

जब हम प्रभु के गुणों का गायन करते हैं तो हम आध्यात्मिक संग्रामों में विजयी होते हैं। काम क्रोधादि शत्रु हमारी इन्द्रियों को बन्धक नहीं बना पाते तथा इस स्मरण से ही हम आध्यात्मिक संग्राम में विजयी होते हैं। इस का उल्लेख ही यह मन्त्र इस प्रकार करता है :-

यस्य संस्थे न व्रण्वते हरी समत्सु शत्रवः।
तस्मा इन्द्राय गायत॥ ऋग्वेद १.५.४॥

इस मन्त्र में दो बातों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि :-

१. जब मानव अपने परमपिता परमात्मा का स्मरण करता है, उसके गुणों का गायन करता है, उसके गुणों को धारण करने का यत्न करता है तो वह प्रभु भी प्रसन्न होकर उसके हृदय में आ कर आसन जमा लेते हैं, उसके हृदय स्थल पर आ कर स्थित हो जाते हैं।

हम अपने एक छोटे से परिवार में ही देखें। जब परिवार का एक नन्हा सा बालक अपने पिता के बताये मार्ग का अनुसरण करता है तथा उस पिता से कुछ पाने के लिए उस का अनुसरण करते हुए उस के गुणों की चर्चा करने लगता है तथा स्वयं को भी उनके अनुरूप बनाने का यत्न करने लगता है तो इस छोटे से परिवार के पालक भी उसे स्नेह देते हैं, उसे आदर-प्यार देते हुए, उसकी इच्छाएं पूर्ण करने का यत्न करते हैं। फिर वह प्रभु तो जगत पालक हैं, वह प्रभु तो इस जगत रुपी सम्पूर्ण परिवार का पालन करते हैं। जब इस पालक का, उसका कोई बालक स्मरण करता है तो वह उस से स्नेह क्यों न करेंगे ? वह उसकी इच्छाएं पूर्ण क्यों न करेंगे ? अतः वह प्रभु भी अपने गायन करने वाले भक्त के हृदय में आकर बैठ जाते हैं।

जिस के हृदय में प्रभु अवस्थित होते हैं, निवास कर रहे होते हैं, उस पर काम क्रोध आदि उसके आन्तरिक शत्रु अपना अधिकार नहीं जमा सकते क्योंकि अन्दर तो प्रभु का निवास हो चुका है। प्रभु के निवास के कारण अन्दर अन्य कोई स्थान बचा ही नहीं, जहां आकर वह अपनी सत्ता जमा सके। प्रभु ने हमारे अन्दर निवास भी तो तब ही किया है, जब यह काम क्रोध आदि हमारे अन्दर के शत्रु हमारे आध्यात्मिक संग्राम में हमसे पराजित हो गये हैं, हम ने इन्हें विजय कर अपने बस में कर लिया है। यदि यह शत्रु हमारे बस में न होते तो प्रभु हमारे अन्दर प्रवेश ही न करते। इस प्रकार प्रभु गुणगान से जब वह प्रभु हमारे अन्दर रहने लगते हैं तो हमारे अन्दर के शत्रु उनके कोप से, उनके तेज से भयभीत हो कर दूर भाग जाते हैं, कहीं जा कर छुप जाते हैं, सामने आने का उनमें साहस ही नहीं रहता।

मन्त्र कहता है कि जब हम अध्यात्म संग्राम कर रहे होते हैं, जब हम अपने अन्दर के शत्रुओं से लड़ने के लिए उस पिता के गुणों का गायन कर रहे होते हैं तथा जब वह प्रभु हमारे हृदय में आकर निवास करने लगते हैं तो हमारे काम-क्रोध आदि अन्दर के शत्रु हमारे आध्यात्मिक संग्रामों में अपने ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय रूपी अश्वों को, घोड़ों को इस आक्रमण में, इस लड़ाई में प्रयोग करने के लिए नहीं चुनते, उन्हें हम पर आक्रमण करने के आदेश की स्थिति में ही नहीं होते अर्थात हमारी ज्ञानेन्द्रियां तथा हमारी कर्मेन्द्रियां इस क्रोधादि के आक्रमणों से मुक्त हो जाती हैं। यह काम क्रोधादि अब इन पर आक्रमण नहीं करते। इसलिए आओ इन आक्रमणों से हमें मुक्त कराने वाले उस परम ऐश्वर्य शाली प्रभु का हम मिलकर गुणगान करें, उसका स्मरण करने के लिए उसके निकट अपना आसन लगाएं।

२. मन्त्र का दूसरा भाग हमें उपदेश करते हुए बता रहा है कि जहां प्रभु का गायन होता है, जहां आध्यात्मिक उपदेश होता है, जहां के लोग उस पिता के समीप आकर बैठ जाते हैं, वहां पर काम क्रोध आदि प्रवेश करने का साहस ही नहीं करते। यह कामादि हमारे अन्दर के शत्रु प्रभु स्मरण करने वाले, प्रभु भक्त से सदा ही भयभीत रहते हैं, उससे सदा ही डरते हैं। इस कारण प्रभु स्मरण इन शत्रु रूपी रोग की सर्वोत्तम, सब से उत्तम औषध होती है। इस औषध के निरन्तर सेवन से कभी भी काम क्रोध आदि हमें परेशान नहीं करते। इस प्रकार प्रभु स्मरण हमारे शरीर की सब व्याधियों को, सब रोगों को दूर कर देता है। इस प्रकार हमारा मन औषधियों से बच जाता है।

विज्ञान का आदि स्रोत व प्रेरक होने से वेद भविष्य का एकमात्र सर्वग्राह्य एवं सर्वमान्य धर्म

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून

आज का युग आधुनिक युग है। यह आधुनिक युग बौद्धिक उन्नति, विज्ञान की खोजों एवं उसके अनुसार जीवनयापन करने के परिणाम-स्वरूप अस्तित्व में आया है। विज्ञान में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षित व्यक्ति ही ज्ञानी हो सकता है और ज्ञानी व्यक्ति ही विज्ञान को जान कर उसका विकास, उन्नति, विस्तार व उसका सदुपयोग कर सकता है। आधुनिक समय में विज्ञान ने जो स्थिति प्राप्त की है उसका अधिकांश श्रेय यूरोप वा पश्चिम के लोगों को जाता है और सारा संसार उनका ऋणी है। पिछले दो चार सौ वर्षों में उन्होंने विज्ञान को बुलन्दियों पर पहुंचा दिया। यद्यपि आधुनिक विज्ञान का विकास व विस्तार पश्चिमी देशों के लोगों ने किया है, जो प्रायः ईसाई मत के अनुयायी थे, फिर भी हिन्दू, मुस्लिम व अन्य मत के लोगों ने, विज्ञान की उन धारणाओं व मान्यताओं को बिना ननुनच के स्वीकार कर लिया। धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं के क्षेत्र में तो यह सहयोग अद्यावधि संभव ही नहीं हो सका है। सभी जानते है कि सामिष भोजन कई दृष्टियों से स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है तथापि वह इसको छोड़ने के लिए तत्पर नहीं हैं पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी तर्क व बुद्धि की कसौटी पर सत्य पाया गया है परन्तु उसे भी वेदेतर मत स्वीकार नहीं करते। ईश्वर का स्वरूप भी लें, तो यह जैसा वेदों, उपनिषदों व दर्शनों से प्राप्त होता है, वैसा सारे संसार के साहित्य में नहीं है। यही बुद्धि, तर्क व सत्य की कसौटी पर प्रमाणित होता है फिर भी इस सत्य को भी अन्य मतावलम्बी स्वीकार नहीं करते और अपने अपने अप्रमाणित मत को ही मानते आ रहे हैं। विज्ञान की बातों का सभी मतावलम्बियों द्वारा स्वीकार किया जाना इस कारण से है कि एक तो उनके अपने मतों के सिद्धान्तों का वैज्ञानिक मान्यताओं से अधिक टकराव नहीं होता, अधिक तब होता जब वहां विज्ञान विषयक मुख्य मुख्य बातें होतीं, जब या तो हैं ही नहीं या गौण रूप में है, तो फिर टकराव का प्रश्न ही नहीं है। दूसरा कारण यह हो सकता है कि क्योंकि विज्ञान सत्य मान्यताओं का नाम है और सत्य मान्यताओं से मनुष्यों का जीवन सुखी होता है, अतः स्वार्थ व लोगों के जीवन के सुख के कारण भी सभी लोग इसे स्वीकार कर लेते हैं और यह भूल जाते हैं कि विज्ञान की वह मान्यता किसी ईसाई, मुस्लिम या अन्य मत के वैज्ञानिक ने खोजी हैं।

जिस प्रकार विज्ञान के सिद्धान्त सर्वमान्य एवं सबके लिए लाभकारी हैं उसी प्रकार धर्म की दृष्टि से वेदों एवं वैदिक साहित्य के सिद्धान्त ईश्वर प्रदत्त हैं, साक्षात्कृतधर्मा एवं तत्ववेता ऋषियों व मनीषियों आदि के द्वारा परीक्षित हैं एवं इनके सत्य पाये जाने के कारण शत-प्रतिशत यथार्थ हैं। इस कारण यह सारी दुनियां के लोगों के लिए समान रूप से लाभकारी, माननीय एवं जीवन में धारण एवं आचरण करने योग्य हैं। परन्तु, क्योंकि वेदतर मत के लोगों के अपने अन्य-अन्य विचार, मान्यतायें एवं सिद्धान्त हैं अतः उन्हें डर है कि वेदाध्ययन करने और वेदों में निहित सत्य सिद्धान्तों को स्वीकार करने से उनके अपने मतों का आधार ही ध्वस्त न हो जाये, अतः वह वेद, वैदिक सिद्धान्तों व मान्यताओं को स्वीकार नहीं करते। दूसरा कारण आर्य समाज के विद्वानों एवं नेताओं की अपनी खामियां एवं दोष हैं जिस कारण वेदों का जितना प्रचार व प्रचार अपेक्षित था, वह नहीं किया गया है। वेदों के प्रचार प्रसार में कमियां रही हैं व अब भी हैं। सम्प्रति आर्य समाज की इकाईयां, प्रतिनिधि सभायें पद व प्रतिष्ठा से जुड़े विवादों के कारण संगठन की दुर्बलता के रोग से ग्रसित हैं। यह विचारणीय है कि वैदिक मत के सिद्धान्तों के पालन से वेदानुयायी को मुख्यतः क्या लाभ होता है जो अन्य मत के सिद्धान्तों को मानने से प्राप्त नहीं हो सकता। इस सम्बन्ध में मुख्य लाभ तो वैदिक धर्म में बार-बार के जन्म-पुनर्जन्म के चक्र की समाप्ति होकर समस्त दुःखों से मुक्ति प्राप्त होती है। जीवात्मा, जो कि एक सत्य, अनादि, अजन्मा, नित्य, अविनाशी व अमर सत्ता है, को बार-बार के पुनर्जन्म से छुट्टी ही नहीं मिलती अपितु ईश्वर का सान्निध्य एवं ईश्वर का आनन्द, जो संसार के सभी लौकिक सुखों से कहीं अधिक है, प्राप्त होता है। वेद के अनुचान विद्वानों, जो सत्य व असत्य, ज्ञान व अज्ञान, विद्या व अविद्या, पौरूषेय व अपौरूषेय रचना का अन्तर यथार्थ रूप से जानते हैं, का स्पष्ट एवं तार्किक मत है कि बिना सात्विक भोजन, यम-नियमों का पालन, यथार्थ रीति से योगाभ्यास, सन्ध्या, ध्यान, तप, ईश्वरोपासना, ईश्वर प्रणिधान, यज्ञ व अग्निहोत्र आदि कार्यों को किए बिना मुक्ति असम्भव है। हम समझते हैं कि अन्य मत के लोग स्वयं को सत्य का आग्रही, सत्य का अनुगामी एवं सत्याचारी नहीं कह सकते क्योंकि न तो वह वैदिक मत के सिद्धान्तों को स्वीकार करते हैं और न ही सत्यासत्य के निर्णय एवं सत्य को स्वीकार करने के लिए विवादित विषयों पर शान्तिपूर्वक वार्तालाप या शास्त्रार्थ के लिए तत्पर ही होते हैं।

वेदों में ऐसा क्या है कि जिस कारण अन्य मतावलम्बियों को वेदों एवं वैदिक साहित्य का अध्ययन कर अपने वेद से भिन्न सिद्धान्तों को छोड़कर वेदों के सिद्धान्तों व मान्यताओं को स्वीकार कर लेना चाहिये ? इसका प्रथम उत्तर तो यह है कि वेद इस ब्रह्माण्ड व समस्त सृष्टि को एक सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रेरित, प्रादुर्भूत, निर्मित, रचित व संचालित मानते हैं कि जबकि अन्य किसी मत में ईश्वर का ऐसा स्वरूप वर्णित नहीं है। महर्षि दयानन्द ने इसका सरलीकरण कर लिखा है कि ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। जहां तक हमारा ज्ञान है, दुनिया के किसी भी मत व सम्प्रदाय में ईश्वर के निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, अजर, अमर, अजन्मा, अनन्त आदि स्वरूप की कल्पना ही नहीं की जा सकी जिससे वह मत ईश्वर के सत्य स्वरूप के वर्णन में विद्या व ज्ञान की दृष्टि से बहुत पीछे हैं। तर्क व प्रमाणों से भी ईश्वर का वेद-सम्मत-स्वरूप ही सत्य सिद्ध होता है। जितना विशाल ब्रह्माण्ड है, वह सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ व सर्वान्तर-यामी स्वरूप वाले ईश्वर से ही प्रादुर्भूत होना सम्भव है, अन्य मनुष्य जैसी स्वरूप-वाली किसी अन्य चेतन सत्ता से तो सृष्टि की रचना व पालन हो ही नहीं सकता। दूसरा कारण है कि वेद सृष्टि के आरम्भ में उस सृष्टिकर्त्ता से ही आविर्भूत हुए हैं। वेद किसी एक व्यक्ति एवं व्यक्ति-समूह द्वारा रचित व निर्मित नहीं हैं। वेदों की जो भाषा, इसके शब्द व पदों की मौलिकता, सरलता व अर्थों की गम्भीरता एवं व्याकरण की उत्कृष्टता आदि जो उल्लेखनीय गुण हैं वह इसे अपौरूषेय सिद्ध करती है। वेदों ने ही जीवात्मा को, चेतन तत्व, अजन्मा, अनादि, नित्य, स्वल्प परिमाण, एकदेशी, कर्मों का कर्त्ता व फलों का भोक्ता, जन्म-मरण व पुनर्जन्म को प्राप्त होने वाला बताया है और वेदवर्णित जीवात्मा का यह स्वरूप भी तर्क व प्रमाणों से सिद्ध है जबकि अन्य मतों में जीवात्मा का इस प्रकार से वर्णन व उल्लेख उपलब्ध नहीं होता। ईश्वर यदि वेदों का ज्ञान न देता तो जीवात्मा के नित्य, अजन्मा, अनादि, अमर, अविनाशी, सकाम कर्मों के कारण बन्धन में पड़कर जन्म व पुनर्जन्म को प्राप्त होने वाले, इस जीवात्मा के इस स्वरूप की तो मनुष्यों द्वारा कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। मोक्ष का विचार, इसका स्वरूप व प्राप्ति के उपायों एवं मोक्षावस्था में जीवात्मा की स्थिति, मोक्ष से जीवात्मा की वापिसी आदि के बारे में जो वर्णन वेदों एवं वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है, वह दुनिया के किसी साहित्य में उपलब्ध नहीं होता। यदि कहीं कुछ थोड़ा बहुत मिलता है तो वह अतीत काल में भारत से ही उन देशों में गया हुआ है, ऐसा सम्भव है और इसे मानने के अनेक कारण हैं। यहां मनुस्मृति का श्लोक 'एतद्देशस्य प्रसूतस्य सकाशाद-ग्रजन्मनः, स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।' प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। वेद ही सर्वप्राचीन ऐसे गन्थ हैं जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, उसके 4 अरब 32 करोड़ वर्षों तक का जीवन या आयु और उसके बाद प्रलय का उल्लेख मिलता है जो कि बुद्धिसंगत एवं सत्य है। यह वर्णन सत्य इसलिए है कि वेदों ने सृष्टि की आयु 4.32 अरब वर्षों की बताई है जिसमें से 1,96,08,-53,012 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं।

(क्रमशः)

आर्य समाज के रत्न भाई परमानन्द

-ले० डा० एच. कुमार कौल डायरैक्टर गांधी आर्य सी. सै० स्कूल बरनाला

भारत माता के महान सपूत, अमर बलिदानी, सत्यनिष्ठ, सिद्धान्तवादी, समाज सुधारक, क्रान्तिकारी, दार्शनिक, जातिभेद निवारक, आदर्श तपस्वी सन्त थे भाई परमानन्द। महान देशभक्त भाई परमानन्द का जन्म चार नवम्बर सन् 1876 ई० को जेहलम जिला के करियाला ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम भाई ताराचन्द एवम् माता का नाम श्रीमती मथुरादेवी था। वह प्रारम्भ से ही कुशाग्र बुद्धि के कारण सभी अध्यापकों के प्रिय थे। वह बचपन से ही साहसी थे। उनके बचपन की घटना इसका प्रमाण है। एक बार लड़के इकट्ठे होकर प्रभातकाल से पहले ही पढ़ने के लिए करियाल से निकल पड़े। कब्रिस्तान से निकलते ही उन्हें भूतों का डर सताने लगा। उन्हें आग की लपटें दिखाई देने लगी उन्हें लगा कि वह भूतों की चपेट में आ गये हैं। तब संस्कारी आत्मा भाई परमानन्द बिना डरे अकेले ही आगे चल पड़े और सारा रहस्य खोल दिया। रहस्य खुला कि रमजान के महीने के कारण मुसलमानों ने जल्दी भोजन के लिए तन्दूर तपा रखे थे। सन् 1901 में आपने एम.ए. किया और दयानन्द कॉलेज लाहौर के प्राध्यापक नियुक्त किए गये। वे कष्टों को धूप छाँव के समान समझते थे। भाई परमानन्द जी ने किसी के कहने से नहीं, स्वेच्छ से भरी जवानी में तपस्या का सुकठोर व्रत धारण किया। देश व जाति का हित ही उनके लिए सर्वोपरि था।

उनकी सोच बहुत ऊँची थी। यह उस व्यक्ति की सोच है जिसने ब्रिटिश राज्य को भी कंपा दिया था। उनसे भयभीत अंग्रेजों ने उन्हें फांसी की सजा सुनाई परन्तु बाद में उनकी सजा माफ कर दी गई। परन्तु इस महात्मा को कोई भी सजा पथ से विचलित नहीं कर सकी। सम्वत् 1988 में आर्यसमाज की नया बांस देहली में भाई परमानन्द जी ने ही नींव रखी।

भाई जी इतिहास विद् थे। वह अपने पूर्वजों व मातृभूमि का गौरवमय इतिहास सुरक्षित करने के लिए चितिंत थे। उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अनेक विदेशों में भी यात्राएँ की। आपने अमेरिका से औषधि-निर्माण की शिक्षा लेकर लाहौर में अपना दवाघर खोल दिया। उनकी प्रसिद्धि को देखकर उस समय के तानाशाह माइकल ने कहा-"वह कहता है, कि औषधियां बनाता हूँ, ये तो भगवान जाने कि वह बनाता क्या है।"

भाईजी को आरम्भ से ही घूमने फिरने में विशेष, आनन्द आता था। जहाँ प्राकृतिक दृश्यों को देखते, वहाँ लोगों की धार्मिक व आर्थिक स्थिति को बड़े ध्यान से देखा करते थे। राजनैतिक अवस्था पर विचार करते हुए भाव-विभोर हो जाया करते थे। 1903 में भाईजी जब लाहौर में पढ़ाते थे तो पैदल यात्रा पर एक लोटा व एक कंबली के साथ चल पड़े। दो मास की पदयात्रा पर केवल 15 रुपये खर्च हुए। वे ऐसे महान समाज सुधारक थे कि समाज सुधार के लिए भूखे प्यासे भी मीलों तक पैदल चलते थे।

भाईजी ने निर्धनों के बच्चों को पढ़ाया, अनाथ बच्चों और राजपूत राजकुमारों को भी पढ़ाया। वे तपस्वी भी थे और मनस्वी भी थे। वे अंग्रेजी इतिहास आदि विषयों को तो पढ़ाते ही थे इससे भी बढ़कर अपने शिष्यों को देश, धर्म व जाति की सेवा की घुट्टी नित्यप्रति घोट-घोट कर पिलाते थे। राजा का पुत्र हो या रंक का, भाईजी शिष्यों से सामान प्यार करते थे।

ऋषि दयानन्द का जीवन चरित उनके लिए एक हुतात्मा व क्रान्तदर्शी का पावन चरित था। इन्हीं से प्रेरणा लेकर उन्होंने भारतीय नरेशों के सुधार का विचार भाईजी के मन में आया।

भाईजी एक गम्भीर विद्वान तो थे ही, एक कुशल लेखक भी थे। उन्होंने कई मौलिक ग्रन्थ भी लिखे। वह चाहते थे कि स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे गुरूकुल खोले जावें जो एक बड़े गुरुकुल से सम्बद्ध हो, उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी पद का लालच नहीं किया इसका प्रमाण है कि 1927 में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के पश्चात दिल्ली में आर्य महासम्मेलन में अध्यक्ष चुना गया परन्तु भाईजी ने यह पद लेने से इंकार कर दिया तत्पश्चात् हंसराज को इस पद के लिए चुना गया।

देश-विदेश के अनेक महापुरुषों व तपस्वी समाजसेवियों का स्नेह व सम्पर्क उन्हें प्राप्त रहा। लाला हरदयाल, लाला लाजपतराय, प० श्यामजी, वीर सावरकर, वीर अजीत सिंह, सूफी अम्बाप्रसाद, वीर किशनसिंह, वीर भगतसिंह, बापू गांधी जी, स्वामी श्रद्धानन्द, मदन मोहन मालवीय, डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी आदि विभूतियों के साथ लोकसेवा का आपको सौभाग्य प्राप्त रहा। इस कारण लोकसेवा मंडल के एक नेता स्वर्गीय श्री फिरोजचन्द जी ने उन्हें 'A Trustee of the Young Souls' कहा था। इसका भाव यही है कि भाईजी युवकों के लिए प्रेरणा पुञ्ज थे। आपके तपोनिष्ठ जीवन का आकर्षण ही कुछ ऐसा था कि प्राणोत्सर्ग करने वाले स्वयं ही आपके पास खिंचे-खिंचे चले आते थे।

लाला लाजपत राय ने जब लोकसेवक मंडल की स्थापना की तो इसके मंडल के पांच ट्रस्टियों में भाई परमानन्द जी भी एक थे। लालाजी के कारागार जाने के बाद आपको कार्यवाहक-निर्देशक के रूप में नियुक्त किया गया। उस विकट परिस्थिति में उन्नति-पथ पर चलने योग्य बनाने का श्रेय भाईजी को ही जाता है। भाईजी मंडल के राष्ट्रीय महाविद्यालय में जो इतिहास विषयक लैक्चर देते थे उन लैक्चरों का ही परिणाम था कि देश को क्रान्तिक्रारियों के मुकुटमणि सरदार भगतसिंह प्राप्त हुए।

भाईजी के जीवन में बनावट व दिखावट नहीं थी। अपनी छोटी सी कुटिया में चारपाई पर बैठे हुए, युवकमंडली से घिरे हुए हृदय खोलकर बाते करते थे। जो कोई भी उनके सम्पर्क में आया वह उनकी स्पष्टवादिता, तपस्या व देशप्रेम से प्रभावित हुए बिना न रह सके। उनके पवित्र-चरित्र की तो विरोधी भी खूब प्रशंसा करते थे।

भाईजी को कालापानी के नरककुण्ड में क्या-क्या यातनाएँ दी गई यह एक लम्बी कहानी है।

इस विषय में कहा जा सकता है-

जेलों में जीवन गल गए।
वीरों के यौवन ढल गए॥

कालापानी में स्वतन्त्रता तनिक भी न थी, सो सड़-सड़कर मरने की बजाय अन्न त्याग करके शरीर छोड़ने का निश्चय किया। लम्बी भूख-हड़ताल से और दुबर्लता हो गई। फिर बहुत आग्रह करने पर उन्होंने अन्न तो ग्रहण कर लिया परन्तु इस तपस्या से उन्हें आत्मबल मिला। श्री एड्रयूज़ व गांधी जी के प्रयासों से भाईजी को कालापानी से मुक्त कर दिया गया। उनके लौटने पर उनको सम्मानित करते हुए दस सहस्त्र की थैली भेट करने का एक दैनिक ने प्रस्ताव किया, परन्तु भाईजी ने किसी से कुछ लेना उचित न समझा।

भगतसिंह के पिता नहीं चाहते थे कि उनका पुत्र क्रान्ति पथ का पथिक बने। भाईजी ने उनसे कहा-"यदि पग उठा है, तो पीछे न हटना। भय, प्रलोभन, दुबर्लता, सिगरेट आदि व्यसनों पर पूर्ण विजय पाओ। निष्कलंक चरित्र होना चाहिए। आत्मसंतोषी बनो।" यह भाईजी का दीक्षान्त भाषण था।

जो जन्मा है सो मरेगा। जो बना है सो टूटेगा। जो आया है सो जाएगा। देश विभाजन का आघात वह सह न सके। देश विभाजन को वे राष्ट्रीय अपमान समझते थे। उनका कहना था कि मेरे जीने से क्या लाभ? पहले अन्न छोड़ा, फिर बोलना भी बन्द कर दिया। आठ दिसम्बर को जालन्धर में शरीर छोड़ दिया। वे चल बसे और उनके साथ देश के लिए एक लम्बे संघर्ष की समाप्ति हो गई।

वह मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं रखते थे उनका मानना था कि लोग एक सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक ईश्वर में इतना विश्वास नहीं रखते जितना कि कल्पित, देवी-देवताओं व जल स्थल आदि तथाकथित तीर्थ स्थानों में। उनका मानना था कि ईश्वर ने मनुष्य को अन्न, जल, फल, फूल, सूर्य, चन्द्र वायु आदि मनुष्य के कल्याण के लिए दिये हैं। सृष्टि के नियम अटल व सार्वभौमिक है। वेद ही परमात्मा का सच्चा ज्ञान हैं। उन्होंने प्रवासी भारतीयों के दु:ख को समझा और दूर करने का प्रयास किया। देश-विदेशों का भ्रमण किया वेद प्रचार किया।

हम कह सकते हैं कि कुछ लोग नाम के लिए, प्रसिद्धि के लिए कार्य करते हैं। कुछ मनुष्य सत्ता व सम्पत्ति के लिए कार्य करते है। परन्तु ऐसे तो विरले लोग होते हैं जो अपनी मान्यताओं के लिए, लक्ष्य सिद्धि के लिए, धर्म की रक्षा, समाज सुधार के लिए अपना समय, शक्ति, स्वास्थ्य व सम्पदा वार देते हैं। ऐसी महान आत्मा थे देवतास्वरूप भाई परमानन्द।

श्वेत वस्त्रों में संन्यासी-महात्मा हंसराज प्रतिपादित पञ्चसकार

-ले० -डॉ. भवानी लाल भारतीय, 3/5 शंकर कालोनी, श्री गंगानगर

1933 के वर्ष अजमेर में ऋषि दयानन्द के निर्वाण की अर्द्धशताब्दी मनाई जा रही थी। ध्यातव्य है कि तब के पच्चास वर्ष पूर्व 20 अक्टूबर 1883 को इसी अजमेर नगर में पुण्यश्लोक ऋषि दयानन्द ने परलोक प्रस्थान किया था। निर्वाण शताब्दी के इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ किया गया था। पं. युधिष्ठिर मीमांसक इसमें वेदपाठी के रूप में सम्मिलित हुए थे। आर्य-सन्यासी पर्याप्त संख्या में उपस्थित थे। इन साधुओं की एक अनौपचारिक बैठक में चर्चा चली कि महात्मा हंसराज पर्याप्त वृद्ध हो गये हैं। इन्हें अब सन्यास ले लेना चाहिए। विचार हुआ कि हम आर्य सन्यासियों में मूर्धन्य स्वामी सर्वदानन्द जी से निवेदन करें कि वे महात्मा जी को सन्यासी बनने की प्रेरणा दें। यह सन्यासी समूह स्वामी सर्वदानन्द जी के समीप गया तथा उनसे महात्मा जी को चतुर्थ आश्रम में प्रविष्ट होने के लिए निवेदन करने के लिए कहा। स्वामी जी समझ गये और उन्होंने साधु मण्डल से कहा-"**आप लोग हंसराज जी के त्याग, तप तथा कर्मण्यता को नहीं जानते। उनकी साधना व सेवा वृत्ति अपूर्व है। वे सफेद वस्त्रों में सन्यासी हैं। उन्हें किसी अन्य भगवा वस्त्र पहनकर सन्यासी बनने की आवश्यकता नहीं है।**" साथ ही यह भी कहा कि वे महात्मा जी से कुछ उपदेश ग्रहण अवश्य करें।

निश्चय के अनुसार सन्यास मण्डली श्वेत वस्त्र मण्डित श्वेत श्मश्रु (दाढ़ी, मूंछ) धारी महात्मा जी की सेवा में उपदेश हेतु प्रस्तुत हुई। महात्मा जी ने उन्हें सम्बोधित कर कहा। मैं पंजाब प्रान्त का हूं जहां गुरु नानक के अनुयायी सिख लोग पर्याप्त हैं। ये पञ्च ककार अनिवार्य रूप से धारण करते हैं। ये पांच वस्तुएं हैं जिनके नाम 'क' से आरम्भ होते हैं-केश, कंघा, कटार, कच्छ तथा कड़ा। निश्चय ही ये ब्राह्य पदार्थ है। हम आर्यों को चरित्र निर्माण तथा नैतिक आचरण की वृद्धि के लिए पंच सकारों का व्रत लेना चाहिए। पुनः पञ्चसकारों का नामोल्लेख किया- 1. संध्या, 2. स्वाध्याय, 3. संस्कार, 4. सेवा, 5. सत्संग। इनका विस्तार करते हुए कहा-

संध्या-प्रतिदिन किये जाने वाले पंच महायज्ञों में ब्रह्मयज्ञ के अन्तर्गत संध्या तथा स्वाध्याय को ग्रहण किया जाता है। प्रत्येक आर्य के दिन का आरम्भ संध्योपासना से होना चाहिए। ऋषि दयानन्द प्रतिपादित संध्योपासना के प्रमुख अंग निम्न हैं-शिखाबंधन,-गायत्री मंत्रोच्चारण पूर्वक, आचमन, इन्द्रिय स्पर्श, मार्जन, प्राणायाम, अघमर्षण, मनसा परिक्रमा, उपस्थान, गायत्री जप, समर्पण वाक्य, नमस्कार मंत्र पूर्वक समाप्ति। आगे चलकर महात्मा नारायण स्वामी ने संध्याविधि की व्याख्या लिखी तो बताया कि अघमर्षण पर्यन्त क्रियाओं से संध्या करने वाला स्वयं की उन्नति करता है। इसमें शरीर शुद्धि, इन्द्रिय शुद्धि, प्राणों का व्यायाम तथा पाप नाशन आदि हैं। मनसा परिक्रमा का उद्देश्य यह बताना है कि अन्यों के प्रति हमारा व्यवहार द्वेषरहित होना चाहिए। उपस्थान प्रकरण तो परमात्मा के प्रति स्वयं को निवेदित करना है। जो व्यक्ति संध्या नहीं करता वह साधु (सत्पुरुषों) की मण्डली में रहने के योग्य नहीं है।

स्वाध्याय-संध्या के साथ स्वाध्याय का अनिवार्य सम्बन्ध है। स्वाध्याय के लिए ईश्वरीय ज्ञान वेद को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। तत्पश्चात् उपनिषद आदि अध्यात्म शास्त्र के आर्ष ग्रन्थ स्वाध्याय के लिए उपयोगी हैं। रामायण, महाभारत, भगवद् गीता, मनुस्मृति आदि ऋषियों के लिखे वे ग्रन्थ हैं जो आर्ष इतिहास तथा धर्म के ग्रन्थ हैं। नियमपूर्वक स्वाध्याय करने के अनेक लाभ हैं। ऋषि पंतजलि ने स्वाध्याय को पांच नियमों के अन्तर्गत स्थान दिया है। योगदर्शन पर व्यास मुनि का भाष्य है। इसमें स्वाध्याय का फल बताते हुए कहा है कि स्वाध्याय से परमात्मा का प्रकाश (ज्ञान) होता है। योगदर्शन के विभूति पाद में स्वाध्याय का फल '**इष्ट देवता संप्रयोग**' बताया गया है जिसका अर्थ है-**अपने लक्ष्य को प्राप्त करना।** यह स्वाध्याय से ही सम्भव है।

संस्कार-संस्कारों का तीसरा स्थान है। ऋषियों ने मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, पारिवारिक तथा सामाजिक विकास के लिए गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कारों के क्रियान्वयन को अनिवार्य माना था। तदनुसार, आश्वलायन, पराशर, गोभिल आदि सूत्रकारों ने विभिन्न गृह्य सूत्रों की रचना कर संस्कारों के महत्त्व तथा विधियों का लेखन किया था। समयान्तर में इन आर्ष विधियों के साथ-साथ अनेक अनार्ष विधियों का समावेश संस्कार कृत्यों में होने लगा-यथा, गणेश पूजा, नवग्रह पूजा, यज्ञों में मांसादि की अहुतियां आदि। ऋषि दयानन्द ने परिष्कार पूर्वक सोलह संस्कारों की विधि लिखी जो सर्वथा आचरण योग्य है।

सेवा-महात्मा हंसराज प्रतिपादित सेवा कर्म चौथा सकार है। उनका कहना था कि शिक्षा प्रचार, नारी शिक्षण, रोगियों की सेवा उपचार आदि सेवा कार्य अवश्य करणीय है। भारत में ईसाई प्रचारकों के आगमन के साथ ही ये सेवा प्रकल्प आरम्भ किये गये परन्तु मिशनरियों के सेवा कार्य में धर्म परिवर्तन का गोपनीय लक्ष्य छिपा था। आर्य समाज ने दैवी आपद विपद-अकाल, दुर्भिक्ष आदि में निष्काम सेवा की जिसका अभीष्ट लाभ लोगों को मिला। अन्तिम सकार-

सत्संग-इसे महात्मा जी ने जाति संगठन का मुख्य आधार बताया। वैयक्तिक उपासना के साथ-साथ समाज मंदिरों में साप्ताहिक सत्संगों में जाना सामाजिक संगठन के लिए लाभप्रद है। ईसाईयों ने प्रचारित किया कि आर्य समाज के सत्संग ईसाईयों की Sunday Worship की नकल है। उनका आक्षेप था कि हिन्दू धर्म में सामूहिक उपासना के लिए कोई जगह नहीं थी, न है। ऋषि दयानन्द ने इसका प्रबल खण्डन इतिहास के उदाहरण देकर किया। इतिहास ग्रन्थों तथा पुराणों में भी अनेकत्र नैमिषारण्य जैसे जंगलों में अठ्ठासी हजार ऋषियों के धर्म चर्चा के लिए एकत्र होने की चर्चा है। उपनिषदों में राजा जनक जैसे राजर्षियों द्वारा आहूत उन दर्शन गोष्ठियों का उल्लेख मिलता है जिनमें गार्गी आदि विदुषियों तथा याज्ञवल्क्य सदृश ऋषियों के उपस्थित होने तथा धर्म एवं दर्शन की गुत्थियों को सुलझाने के संकेत मिलते हैं। महात्मा हंसराज प्रतिपादित पञ्च सकार सर्वदा सर्वथा आचरणीय हैं।

आर्य समाज नई मण्डी का 85वां वार्षिकोत्सव (होलिकोत्सव)

आर्य समाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर का 85वां वार्षिकोत्सव दिनांक 25, 26 व 27 मार्च 2013 को सम्पन्न हुआ। प्रातः 8 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक चले समापन समारोह का प्रारम्भ आचार्य डॉ० धीरज कुमार आर्य जी के आचार्यत्व में कु० अर्चना शास्त्री, श्रीमती संगीता राठी जी व माता चन्द्रवती जी के वेदपाठ के साथ यज्ञ से हुआ। यज्ञ के यज्ञमान सत्यकाम आर्य, डॉ० फतेहसिंह गौतम व सतीश कुमार शर्मा सपत्नीक रहे। डॉ० धीरज कुमार जी ने बताया कि मनुष्य मन, वचन, कर्म से एकरूप बने। इसके लिए जहां आप सत्संगों में जाएं, योगदर्शन का स्वाध्याय करें। वहीं महर्षि दयानन्द कृत कालजयी-अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करें। आचार्य गुरुदत्त आर्य ने कहा कि मनुष्य क्या है वह अपने आपको क्या बताता है। यह कुछ नहीं। मनुष्य का आचरण ही उसकी कसौटी है। स्वामी योगानन्द, स्वामी भजनानन्द, स्वामी ब्रह्मनन्द, महात्मा प्रेममुनि, सन्दीप वैदिक, कुंवर सुखपाल आर्य, प्रभाकर व घनश्याम प्रेमी आदि के प्रवचन हुए। स्वास्थ्य के लिए हानिकारक रासायनिक रंग-गुलाल से मुक्त वातावरण में नगर-देहात से आए अपार जन-समूह ने होली के पर्व को वैदिक स्वरूप में वेदकथा श्रवण के साथ मनाया। कार्यक्रम में बाबू राजपाल सिंह चाहल एडवोकेट सुरेन्द्र कुमार, एडवोकेट महासचिव जिला बार संघ, बाबू जितेन्द्र कुमार एडवोकेट, बाबू यशपाल सिंह राठौर, भारतवीर सिंह ऐहलावत एडवोकेट, पूर्व चेयरमैन डा० सोमपाल सिंह, डॉ० नरेश कुमार, देवीसिंह आर्य आदि उपस्थित रहे। अन्त में ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-मन्त्री आर्य समाज नई मण्डी

मानव जीवन में प्राणायाम एवं नाड़ी शोधन की महिमा

-ले० मृदुला अग्रवाल 18 सी, सरत बोस रोड, कोलकाता

ईश्वर सर्वत्र परिपूर्ण एवं सर्वव्यापक है। जब कभी कोई योगी पुरुष अपने मन एवं इन्द्रियों का निरोध करके ईश्वरानन्द की धारा को या परमात्मा के साक्षात्कार को प्राप्त करने की चेष्टा करता है, तब वह प्राणायाम द्वारा सर्वरक्षक परमात्मास्वरूप यज्ञकुण्ड में अपने दस प्राणों की आहुति प्रदान करता है।

''अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे।
प्राणापानगति रुद्ध्वा प्राणा यमपरायणाः॥''

-गीता, अध्याय-4, श्लोक-29

कुछ योगीजन अपानवायु में प्राण वायु को हवन करते हैं, अन्य योगीजन प्राण वायु में अपानवायु को हवन करते हैं तथा अन्य योगीजन प्राण और अपान की गति को रोककर प्राणायाम के परायण होते हैं।

''ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये।
साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये।
वागोजः सहौजौ मयि प्राणापानौ॥

-यजुर्वेद, अध्याय-36, मन्त्र-1

अर्थात्-हे विद्वानों! तुम लोगों के संग से मेरी आत्मा में प्राण और अपान ऊपर नीचे श्वास दृढ़ हों, मेरी वाणी मानस बल को प्राप्त हो, उस ऋग्वेद रूप वाणी और उन श्वासों के साथ मैं शरीर बल को प्राप्त होऊं। मनन करने वाले अन्तःकरण के तुल्य यजुर्वेद को प्राप्त होऊं। प्राण की क्रिया अर्थात् योगाभ्यासादिक उपासना के साधक सामवेद को प्राप्त होऊं। उत्तम नेत्र एवं श्रेष्ठ कान सहित स्वस्थ और सब उपद्रवों से रहित समर्थ शरीर को प्राप्त होऊं।

''प्राणापानौ मृत्योर्मा पातं स्वाहा॥''

-अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-16, मन्त्र-1

पदार्थ-(प्राणापानौ) हे प्राण और अपान! तुम दोनों (मृत्योः) मृत्यु से (मा) मुझे (पातम्) बचाओ, (स्वाहा) यह सुन्दर वाणी (आशीर्वाद) हो।

भावार्थ-मनुष्य ब्रह्मचर्य, व्यायाम, प्राणायाम, पथ्य भोजन आदि से प्राण अर्थात् भीतर जाने वाले श्वास और अपान अर्थात् बाहर आने वाले श्वास की स्वस्थता स्थापित करें एवं बलवान् रहकर चिरंजीवी हों।

''अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती।
व्यख्यन्महिषो दिवम॥''

-सामवेद, मन्त्र-631

प्राण और अपान आदि क्रियाओं का संचालन करता हुआ इस परमात्मा का प्रकाश विश्व में व्यापक हो रहा है। महान् परमेश्वर सूर्य की चमक जब मुख्य प्राण को प्रेरित करती है, तभी प्राणीमात्र के शरीरों में वायु का ऊपर-नीचे जाना आदि व्यवहार होता है।

शतपथ में कथन है ''प्राणो थर्वा'' (शतपथ 6।4।2।2) अर्थात् प्राण अथर्वा है। अभिप्राय यह है कि प्राणायाम द्वारा ब्रह्म प्राप्ति भी हो सकती है। वेदों में, उपनिषदों में, गीता में या अन्य आध्यात्मिक ग्रन्थों में प्राणायाम को ही ब्रह्मप्राप्ति, आत्मिक आनन्द या ईश्वरानन्द की धारा को प्राप्त करने का श्रेष्ठतम साधन बताया है। प्राणायाम द्वारा ही मानव देह में नाड़ियों की शोधन-क्रिया भी होती है। यही प्राणायाम की क्रिया योगी को मधुरतादायक मोक्ष की ओर ले जाती है। इस प्रकार की स्तुति आध्यात्मिक यज्ञ भी कहलाती है। ऐसा यज्ञ जो ज्ञानी पुरुष को ''सप्तनयः'' से अर्थात् 7 नाड़ियों (इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना आदि) के द्वारा प्राणों का संयम करके प्राप्त होता है। यहां नाड़ियों की तुलना नदियों से की है।

मनुष्य शरीर में ये 7 नाड़ियां-जो भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम् की प्रतीक हैं-कुम्भक, रेचक, पूरक इन तीन प्राणयामों के द्वारा 21 प्रकार की बन जाती हैं। अर्थात् ''सप्तत्रेधा''-21 धाराओं में विभक्त हो जाती हैं।

''स सप्त धीतिभिर्हितो नद्यो अजिन्वदद्रहः।
या एकमक्षि वावृधुः॥''

-ऋग्वेद, मंडल-9, सूक्त-9, मन्त्र-4

पदार्थ-वह परमात्मा इडा, पिंगलादि सात नाड़ियों को ''नदन्तीति नद्यः'' 'धीयते सर्वकर्मसु इति धीतिर्बुद्धिः' जब बुद्धि की वृत्तियों से धारण किया जाता है तो योग द्वारा नाड़ियों को तृप्त करता है एवं वे नाड़ियां स्वकर्त्तव्य पालन करती हुई उस एक अविनाशी परमात्मा के भाव को मानव अन्तःकरण में प्रकाशित करती हैं।

ऋग्वेद में ऋषि ने सिन्धु नदी की स्तुति करते हुए, उसकी उपमा जीवात्मा से की है, जो कि प्राणायम द्वारा भूः से सत्यम् तक विचरण करता रहता है। उसका यही विचरण ही उसे ब्रह्मरन्ध्र तक पहुंचाकर 'ईश्वरानन्द की धारा' की अनुभूति कराता है। आधार चक्र से 2 अंगुल ऊपर और लिंग से 2 अंगुल नीचे, देह के मध्य प्रदेश में एक पतली अग्निशिखा है। वहां से कुछ दूरी पर 'ब्रह्मग्रन्थि' स्थित है। उसके मध्य में 12 दलों वाला नाभिचक्र है। यहीं पर जीव तन्तुजाल में स्थित मकड़ी की तरह घूमता रहता है। सुषुम्ना से होकर वह ब्रह्मरन्ध्र का आरोहण-अवरोहण करता रहता है।

ब्रह्मरन्ध्र में अमृत धारण करने वाला सहस्रार चक्र है जो ईश्वरानन्द रूपी सुधा धाराओं से शरीर का पोषण करता है। बंगाल के एक सुप्रसिद्ध साधक श्री श्यामाचरण लाहिड़ी ने अपनी दैनिक डायरी में लिखा कि उन्होंने शीतली प्राणायाम द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार किया। उनका यह प्राणायाम कुछ इसी प्रकार का था, जैसे जीव भूः से सत्यम् तक आरोहण-अवरोहण करता है और इसी समय एक ध्वनि उत्पन्न होती थी जो कि, ऋग्वेद, मंडल-10, सूक्त 75, मन्त्र-3, के अनुसार सिन्धु, ''वृषभो न रोरुवत्'', इस प्रकार चलता है मानो बिजार (सांड) गरज रहा है, अथवा बैल की तरह दहाड़ता है। यह भी आध्यात्मिक ध्वनि ही है जिसका वर्णन निम्नलिखित है-

''ब्रह्मरन्ध्र गते वायौ नादश्चोत्पद्यतेऽनद्य।
शंख ध्वनि निमश्रायो मध्ये मेघध्वनिर्यथा॥''

-जाबाल द० उपनिषद् खंड 6

आध्यत्मिक पुस्तकों में नाड़ियों का वर्णन इस प्रकार विद्यमान है-

''केन्द्र मध्य स्थिता नाड़ी सुषुम्नेति प्रकीर्णिता, द्विसप्तति सहस्त्राणि तासां मुख्या ऋतुर्दश॥ सुपुम्ना पिंगला-इड़ा चैव सरस्वती पूषा च वरुणा चैव हस्तिजिह्वा यशस्विनी॥'' अलम्बुषा कुह चैव विश्वोदरी तपःस्विनी, तिष्ठन्ति परितस्तस्यां नाड़या हि मुनिपुंगव। शांखिनी चैव गांधारा इति मुख्याचतुर्दश॥ -जाबाल दर्शनोपनिषद चतुर्थ खंड

सुषुम्ना के चारों ओर व्याप्त नाड़ियां ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त ब्रह्म-ग्रन्थि को ग्रथित करके शरीर का विस्तार करती है। उनमें उपरोक्त 14 नाड़ियां प्रधान हैं। इनमें प्रथम तीन नाड़ी मुख्य हैं। इन तीनों में सुषुम्ना ही श्रेष्ठ हैं। उस ब्रह्मग्रन्थि के मध्य में क्रम से बायीं और दायीं ओर इडा और पिंगला नाड़ी स्थित हैं। सुषुम्ना के दोनों और क्रम से सरस्वती और कुह नामक नाड़ियां हैं। इड़ा के पश्चिम (पीछे) तथा पूर्व (अग्रिम) भाग में गंधारा और हस्तिजिह्वा तथा इसी प्रकार पिंगला के पश्चिम और पूर्व भाग में पूषा और यशस्विनी नाड़ियां स्थित हैं। कुछ और हस्तिजिह्वा के मध्य में विश्वोदरी तथा कुह और यशस्विनी के मध्य में वरुणा नामक नाड़ियां स्थित हैं। पूषा और सरस्वती के मध्य में तपःस्विनी तथा गांधारा और सरस्वती के मध्य में शांखिनी नाड़ी स्थित है।

कन्दमध्य में अलम्बुषा नाड़ी है। इन नाड़ियों में इडा और पिंगला क्रम से बायीं और दायीं सीधी नासिका-पर्यन्त और कुछ लिंग पर्यन्त है। सरस्वती जिह्वा-पर्यन्त, गांधारा पृष्ठ-प्रदेश-पर्यन्त, हस्तिजिह्वा बाएं नेत्र से लेकर बाएं पैर के अंगूठे तक, वरुणा सम्पूर्ण प्रदेश में, यशस्विनी अगूंठा प्रदेश में, यशस्विनी अंगूठा से लेकर दक्षिण पैर तक तथा विश्वोदरी अखिल देह में स्थित रहती है। शांखिनी बाएं कान पर्यन्त, पूषा दक्षिण नेत्र-पर्यन्त, तपःस्विनी दक्षिण कान तक तथा अलम्बुषा गुद-मूल तक स्थित हैं। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

राशिफल का चक्कर

एक दिन मैं बाहर धूप में बैठा अखबार पढ़ रहा था। अकस्मात् एक युवक आया और बोला, अंकल जरा एक मिनट पेपर दिखाना। मैंने पूछा, क्या देखना है ? उसने कहा मुझे आज का राशिफल देखना है। मैंने राशिफल वाला पर्चा निकाल कर दे दिया। वह अपना राशिफल पढ़कर मायूस (निराश) हो गया। मैंने पूछा क्या हुआ ? उसने बताया कि मुझे आज इन्टरव्यू के लिए बाहर जाना है, मेरी राशि में लिखा है, ''यात्रा में दुर्घटना का भय है। मैंने उसको कहा कि इस राशिफल के चक्कर में मत पड़ो। यह राशिफल झूठ का पुलिन्दा है, लगे तो तीर नहीं तो तुक्का है। आप जाओ! कुछ नहीं होगा। उसने कहा, आप तो आर्य समाजी हो, कुछ नहीं मानते, मैं तो मानता हूं। मैंने उससे पूछा, आप कर्मफल को मानते हो अर्थात् जैसे कर्म करोगे वैसा ही फल भोगना पड़ेगा। उसने हां कहकर मान लिया। फिर मैंने पूछा, अच्छा बताओ! राम और रावण की एक ही राशि है परन्तु दोनों के कर्म समान नहीं हैं। राम सत्संग में बैठा है और रावण सिनेमा हाल में है अर्थात् एक शुभ कर्म करता है दूसरा कुकर्म करता है। फिर दोनों का राशिफल एक जैसा कैसे हो सकता है।'' मेरे समझाने पर भी उसकी शंका बनी रही तब मैंने कहा, सामने वाले घर में दूसरा पेपर आता है। उसे मेरा नाम लेकर मांग लाओ। वह लेकर आया तो उसमें उसकी राशि में लिखा था, बिगड़े काम बनेंगे। यह पढ़कर उसे सन्तोष हुआ और बाहर जाने के लिए तैयार हुआ।

प्रिय पाठकों! आप अन्ध विश्वास में राशिफल के चक्कर में पड़कर अपना समय नष्ट मत करो। ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार कर्मफल में विश्वास रखते हुए शुभ कर्म करते रहो। इसमें ही जीवन का कल्याण है। हे प्रभो! हमें सन्मार्ग पर चलने के लिए सद्बुद्धि प्रदान करो।

-ले० देवराज आर्यमित्र

पृष्ठ 5 का शेष- मानव जीवन में.....

''तृष्टामया प्रथम् यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेत्या व्या।
त्वं सिन्धो कुमया गोमतीं क्रुमुं मेहत्नूवा सरथं यमिरीयसे॥''

-ऋग्वेद, मंडल-10, सूक्त-75, मन्त्र-6

भावार्थ-''1=तृष्टामा, 2=सुसर्तु, 3=रसा, 4=श्वेत्या, 5=कुमा, 6=गोमती, 7=क्रुमु, 8=महन्तू। ये 8 नाड़ियां वेद ने और कही है। इनके साथ योग करके आत्मा अनेक देह के कार्यों का सम्पादन करता है। जैसे ''तृष्टामा'' नाड़ी से आमाशय भोजन को पचाता है, ''सुसर्तु'' के योग से देह के समस्त रसों को अपने-अपने स्थानों पर भेजता है, ''रसा'' नाड़ी से समस्त देह में रस व्यापता है, ''श्वेत्या'' से दुग्धवत् रस पक्वाशय से छाती में आकर रक्त से मिलता है, ''कुमा'' नाम नाड़ी जाल से देह की त्वचा का निर्माण करती है, ''गोमती'' से वाणी का उच्चारण व इन्द्रिय शक्तियों को वश करता है। ''क्रुमु'' देह के अंगों के चलने की व्यवस्था करता है, ''महत्नू'' नाड़ी से मूत्र बनने और निकलने की व्यवस्था करता है।''

-श्री जयदेव विद्यालंकार मीमांसा तीर्थ के भाष्य से।

उक्त नाड़ियों की साधना से ''अदब्धा सिन्धु'' अर्थात् अविनाशी आत्मा का रूप निखर जाता है। इस मानव देह में बुद्धिमान लोग प्राणायामों द्वारा इन नाड़ियों को तृप्त कर मुक्ति को प्राप्त कर लेते हैं। यह सब ध्यान एवं चित्त की एकाग्रता का परिणाम है, जो प्रत्येक मनुष्य के लिए सुलभ नहीं है। फिर भी प्रत्येक मनुष्य को योग्य है कि अपने आत्मा में ज्ञान का प्रकाश करके, सर्व व्यवहारों में चतुर होकर, वेदरूपी मार्गों में चलकर आध्यात्मिक आनन्द रूपी मधु को अपने हृदय में स्थापित करें। अपने अंगों से शुभ कर्मों को करके प्रतिष्ठा बढ़ावें, क्योंकि ज्ञानी महात्मा पुरुष जो श्वास लेते हैं वह संसार के उपकार के लिए ही लेते हैं। इसी प्रकार हम भी प्रतिक्षण परोपकार में लगकर अपना सामर्थ्य बढ़ावें एवं जीवन को आत्मिक आनन्द की धाराओं से धन्य करें।

प्राण और अपान के संयम से मनुष्य शत्रुओं से नहीं दबता, उन्हें दबा सकता है, अन्याय को रोककर न्यायधर्म का प्रचार कर सकता है। प्राणायाम द्वारा मानव जीवन के सब संकट कट जाते हैं। अपार वैभव व महिमा भी प्राप्त होता है। शुद्ध और शान्त स्थान पर प्राणायाम करते हुए परमेश्वर का ध्यान करने से हमारे तन, मन, बुद्धि और आत्मा शान्त तथा पवित्र होते हैं। योग साधना में लीन होकर योगी महिमा युक्त हो जाता है।

व्यक्ति अभाव से नहीं अपितु दूसरे के प्रभाव से दु:खी है

आर्यसमाज मंदिर (पंजी), बी ब्लाक जनकपुरी में प्रवचन करते हुए प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने कहा कि आज व्यक्ति अभाव से नहीं अपितु दूसरे के प्रभाव से दु:खी है। कार्यक्रम का संयोजन, संचालन करते हुए प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि मनुष्य जीवन का परमलक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है और इसके लिए जीवन में सत्कर्म करना बहुत आवश्यक है।

पिंडवाड़ा राजस्थान से पधारे डॉ. स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती जी ने कहा कि वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द का त्याग, निर्लोभता और सिद्धान्तवादिता हम सबके लिए अनुकरणीय है। श्री वशिष्ठमुनि आर्यदर्वेश जी ने अष्टांगयोग की चर्चा करते हुए चर्मकाया को चरमकाया बना देने पर बल दिया। इस अवसर पर टंकारा के महामंत्री श्री रामनाथ सहगल जी एवं डॉ. स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती जी का माल्यार्पण, प्रतीक चिन्ह एवं शालादि से सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया और टंकारा ट्रस्ट के लिए 51 हजार की धनराशि भेंट की गई। वेदप्रचार के इस समापन समारोह में डॉ. उत्तमायति, स्वामी दिव्यानंद सरस्वती, डॉ. राणा गन्नौरी, सर्वश्री विनोद बब्बर, अजय सहगल, सुरेन्द्र कुमार मोंगिया, डालेश त्यागी, वेदप्रकाश शर्मा, आचार्य योगेन्द्र शास्त्री, धनसिंह खोबा 'सुधाकर' आदि की उपस्थिति गरिमापूर्ण रही। खचाखच भरे हाल में सभी ने शांतिपूर्वक इन उद्बोधनों को सुना एवं धर्मलाभ उठाया। अतिथियों का स्वागत समाज के मंत्री श्री केवल कृष्ण कपानिया तथा प्रचारमंत्री श्री योगेश्वरचन्द्रार्य जी ने एवं धन्यवाद-ज्ञापन समाज के प्रधान डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने किया। ऋषिलंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

दयानन्द-दर्शन

-ले० आचार्य मित्रसेन आर्य प्रधान, आर्य समाज

(1)

राजों महाराजों तुल्य शोभित तूष्णीत शीश,
गात पर झगला है झूलता झलेमूदार।
सन्त हैं कोपीनवन्त, चूमे पादुका चरण,
भरा-उभरा वदन, गौर तन शीलागार।
एक हाथ से गरल गले में उतार रहे,
एक से बहाते विश्व हेतु वेदामृत धार।
बाल ब्रह्मचारी, सदाचारी, लोकहितकारी,
मेरा नमस्कार देव दयानन्द बारबार॥

(2)

मानस में मेरे बसते ही मन्जु मूर्ति तव,
कविता कवित्त बन आप उर आ रही,
नाना भाव, नाना रस, नाना शब्द, नाना अर्थ
नाना अलंकार-उपहार पहिना रही।
हंस वाहिनी सवेग हंस पर हो सवार,
प्रतिभा कपाट खोल-खोल बलि जा रही।
मित्र जैसे मन्द कवि को अमन्द छन्ददान,
देकर, स्व-भाग्य पर फूली न समा रही॥

(3)

धन्य था नक्षत्र वह, वह तिथि, वार वह,
वह-ग्रह-योग औ, संयोग धन धान्य था।
धन्य 'चन्द्रवसु वसुचन्द्र' अब्द मास धन्य,
अवसर आया ऐसा कभी न अनन्य था।
जिस क्षण हुआ अवतार दयानन्द तव,
उस पल बरसा पीयूष-पर्यजन्य था।
ढोंग, ढोंगियों का, पोल पोपों की, पाखण्डियों का,
हो गया पाखण्ड खण्ड-खण्ड जो जघन्य था।

(4)

पत्रिका प्रसिद्ध थ्योसोफिस्ट में अल्काटादि ने,
जीवन चरित्र चाहा छापना प्रयत्न से।
किन्तु जान पाए परिवार का वृत्तान्त स्वल्प,
उस गृहहीन, उदासीन नर-रत्न से।
गुर्जर प्रदेश, मछुकांटा नदी तीर, राज्य,
मौरवी में टंकारा बताया ग्राम प्रश्न से।
शासनाधिकारी, बड़े शम्भुव्रतधारी पिता,
कर्षन जी ज्ञात हुए प्रत्न कृत्स्न से॥

श्री जसवन्त राय गोयल नहीं रहे

आर्य समाज मोगा के पूर्व मंत्री एवं वेद प्रचार ट्रस्ट के प्रधान श्री जसवन्त राय जी गोयल का दयानन्द मैडीकल कालेज लुधियाना में देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार दिनांक 9 अप्रैल 2013 को पूर्ण वैदिक रीति रिवाज और मंत्रोच्चारण के साथ मोगा में किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज मोगा के समस्त सदस्य एवं पदाधिकारी पधारे हुए थे।

-प्रियतम देव मोगा

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का 106 वां वार्षिक महोत्सव

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आपकी प्रिय संस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का वार्षिक महोत्सव दिनांक 13 एवं 14 अप्रैल 2013 को सोत्साह संस्था प्राङ्गण में मनाया जा रहा है। इस महोत्सव में जहां वैदिक यज्ञ के मन्त्र गुंजायमान होंगे, प्रख्यात् भजनोपदेशकों के भावविभोर एवं सुषुप्त मानव संवेदनाओं को विकसित और जागृत करने वाले भजन होंगे। दो दिवसीय इस समारोह में 13 अप्रैल 2013 को प्रात: 11 बजे से 1 बजे तक 'वैदिक राष्ट्र सम्मेलन' होगा। विषय है-'वेदों में राष्ट्र की अवधारणा।' मध्याह्नोत्तर 3 बजे से सायं 5 बजे तक 'आयुर्वेद और योग सम्मेलन' आयोजित किया जाएगा। 14 अप्रैल 2013 में होने वाले दोनों सम्मेलन छात्र-छात्राओं के लिए निर्धारित किए गए हैं। भाषण कला में दक्ष वक्ता छात्रों और छात्राओं के मुखारविन्द से उच्चारित हृदय के गंभीर भावों का प्रस्फुटन जहां भव्य भारतवर्ष की प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली को सुदृढ़ करता हुआ परिलक्षित होगा, वहीं उनके सद्विचारों का नवीनतम इस आर्यावर्त के उन भावी युवा कर्णधारों की दशा और दिशा का भी सम्यक् दिग्दर्शन कराने में सफल सिद्ध हो सकेगा। इन दोनों सम्मेलनों में युवा छात्र-छात्राएं भाग ग्रहण करके अपनी प्रतिभा का परिचय जन मानस को करा सकेंगे।

14 अप्रैल 2013 रात्रि में कविगण 'मानव चेतना के विकास में कवित्व की अवधारणा' विषय पर सरस कविताओं का रसास्वादन कराएंगे। आप लोग अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म एवं ज्ञान लाभ उठाएं।

-संयोजक वार्षिक महोत्सव समिति

ऋषि बोधोत्सव मनाया

आर्य समाज मन्दिर फतेहगढ़ चूड़ियां में दिनांक 10 मार्च 2013 को ऋषि बोध उत्सव (महाशिवरात्रि पर्व) मनाया गया। प्रात: 10.00 बजे से 12.00 बजे तक कार्यक्रम में हवन यज्ञ करवाया और ऋषि दयानन्द जी के जीवन के बारे में मनोहर भजन भी गाए। इस समय दो हवन कुंड रखे गए थे। इस यज्ञ में प्रधान श्रीमान नरेन्द्र कुन्दरा जी, उप प्रधान श्रीमान अशोक पांधी जी, मंत्री सतीश कुमार सच्चर। कोषाध्यक्ष श्रीमान महाशय कृष्ण गोपाल जी सभी परिवार सहित हाजिर थे, और इसके अतिरिक्त श्रीमान राकेश शर्मा जी, श्री ऋषिदत्त कालिया जी के अलावा युवा बच्चों और माता बहनों, बर्जुगों और गुलाटी परिवार का भी योगदान रहा।

-मंत्री आर्य समाज

आर्य समान सरहिन्द में बोधोत्सव मनाया

आर्य समाज सरहिन्द जिला फतेहगढ़ साहिब में रविवार दिनांक 10 मार्च 2013 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का बोधोत्सव पर्व बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें श्री हेमसिंह शास्त्री ब्रह्म बने। श्रीमती एवं श्री नरेश सूद मुख्य यजमान बने। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का भजनों द्वारा गुणगान किया गया। आर्य समाज के सभी सदस्य परिवार सहित एवं महर्षि दयानन्द हाई स्कूल का स्टाफ एवं बच्चे इस समारोह में उपस्थित थे। मंदिर को लाइटों से सजाया गया था।

इससे पहले शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसमें श्री बलवन्त सिंह जी ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। शोभायात्रा में हाथी, घोड़े, मोटर साइकिल आदि सज धज कर चल रहे थे। ऋषि दयानन्द जी की याद में भजन गाए जा रहे थे। श्री रमेश सूद जी ने लड्डू बांट कर शोभायात्रा का स्वागत किया। स्कूल के बच्चों ने ऋषि लंगर बांटने में सराहनीय योगदान दिया। आर्य समाज के प्रधान श्री लव कुमार सूद ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया।

-लवकुमार सूद प्रधान

आर्य समाज मन्दिर, फरीदकोट में ऋषि दयानन्द जन्म दिन

आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट में ऋषि दयानन्द जी का जन्म दिन मनाया गया। प्रात:काल पण्डित कमलेश कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न करवाया गया जिसमें यजमान श्री प्रमोद कुमार जी व श्रीमती विजय लक्ष्मी जी बने। यज्ञ के पश्चात् भाषण प्रतियोगिता, दयानन्द प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में डी. ए. वी. कन्या विद्यालय फरीदकोट के बच्चों ने भाग लिया। जिसमें जजमेन्ट करने के लिए डा० निर्मल कौशिक जी प्रिंसीपल मालवा डिग्री कालेज कोटकपुरा, श्री कांशी राज व श्रीमती विजय लक्ष्मी जी को आमन्त्रित किया गया। बच्चों ने बड़े उत्साह व जोश भरे शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत किए जिसमें ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को उजागर किया गया। इस सारे कार्यक्रम का आयोजन पण्डित कमलेश कुमार शास्त्री के उत्साहवर्धन से किया गया। शास्त्री जी ने बताया कि इस प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 500, 300, 200 रुपए का नकद इनाम 10 मार्च दिन रविवार को ऋषि बोधोत्सव दिवस पर आयोजित बृहत कार्यक्रम में दिया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के सदस्य श्री कपिल सहूजा, संदीप शर्मा एडवोकेट, नरेश देवगन, मदन मोहन देवगन, स्त्री समाज एवं डी. ए. वी. स्कूल का स्टाफ व प्रिंसीपल श्रीमती रिंकी मैडम उपस्थित हुए। कार्यक्रम के बाद सभी के लिए प्रसाद, चाय की सुन्दर व्यवस्था की गई।

-मन्त्री आर्य समाज मन्दिर

आर्य समाज अबोहर में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर अबोहर में ऋषि बोधोत्सव एवं महाशिवरात्रि का पर्व धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर आर्य समाज के पुरोहित पंडित जन्मजय शास्त्री द्वारा बृहद यज्ञ सम्पन्न किया गया। इस यज्ञ के यजमान श्री सुशील कुमार मेहता एवं श्रीमती सुकेश मेहता थे। समाज के सभी सदस्यगण ने यज्ञ की अग्नि में आहुति डालकर सच्चे मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। यज्ञोपरान्त एम. डी. कालेज प्रिंसीपल आर. पी. असीजा जी ने शिव शब्द का अर्थ और सच्चे ज्ञान तथा परमात्मा के सम्बन्ध में अपने विचार रखे।

इस सुअवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री सोहन लाल सेतिया, प्रदीप गांधी, मुरारी लाल दाबड़ा, सत्यप्रकाश चुघ, वेद प्रकाश जुनेजा, शशि छाबड़ा, विजय मोहन आर्य, श्रीमती कंचन बाला, अरुण प्रभा एवं समस्त अधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित हुए।

-मन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज हबीबगन्ज (अमरपुरा) लुधियाना का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

10 मार्च 2013 दिन रविवार को आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् साधारण सभा की बैठक श्री मुनीष मदान जी के प्रधानता में सम्पन्न हुई। इसमें अगले वर्ष के लिए निम्न अधिकारी सर्वसम्मति से चुने गए।

संरक्षक श्री आशानन्द जी आर्य, प्रधान डॉ० जगदीश गांधी, कार्यकर्त्ता प्रधाना श्रीमती विनोद गांधी, वरिष्ठ-उप-प्रधान मुनीष मदान जी, उप-प्रधान श्री आर. पी. गोयल, महामन्त्री श्री जनक राज भगत, प्रचारमन्त्री श्री योगराज शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री धर्म पाल भगत, अन्तरंग सदस्य श्री मनोहर लाल जी, श्री संजय कुमार जी, श्री संदीप भगत, श्री रमेश कुमार भगत, श्री कंवलजीत जी, श्री नलिन शर्मा, श्रीमती उर्मिला भगत, श्री मदन लाल जी, श्री शान्ति लाल चुघ।

लाहड़पुर (यमुनानगर) आर्य समाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, लाहड़पुर ज़िला यमुनानगर का वार्षिकोत्सव 5 एवं 6 मार्च को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इसमें स्वामी शिवानन्द सरस्वती, स्वामी करुणानन्द सरस्वती व पंडित इन्द्रजित् देव, वैदिक मिशनरी व श्री राजेश आर्य शास्त्री के प्रभावशाली प्रवचनों ने श्रोताओं का मार्गदर्शन किया जबकि श्री रुवेल सिंह आर्यवीर व श्री कल्याण सिंह वेदी के मधुर भजनों व गीतों से श्रोतागण रस विभोर रहे।

-मन्त्री आर्य समाज

ईश्वर स्तुति के लाभ

- ले० श्री नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 502 जी एच 27 सैक्टर 20 पंचकूला

ईश्वर में आस्था ना रखने वाले लोग अक्सर यह पूछते हैं कि जब मनुष्य अपने कर्म करने के लिए स्वतंत्र है और वह किसी कार्य को करने, ना करने अथवा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतंत्र हैं तो वह ईश्वर की स्तुति क्यों करे। और फिर ईश्वर को न्यायकारी कहा जाता है तो वह न्यायकारी ईश्वर हमारी प्रशंसा, चाटुकारिता या स्तुति का भूखा नहीं हैं और ना ही हमारे स्तुति करने से वह अपनी न्याय व्यवस्था भंग करके स्तुति करने वालों को उनके दुष्कर्मों का दंड ना देकर उनकी स्तुति से प्रभावित होकर क्षमादान देते हुए अच्छी नियति पुरस्कार स्वरूप देगा। अब यदि न्यायकारी ईश्वर स्तुति करने पर भी न्याय व्यवस्था को भंग नहीं करेंगे तो प्रश्न उठता है कि ईश्वर स्तुति के क्या लाभ हैं ?

क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में जहां स्तुति को परिभाषित किया वहीं साथ ही साथ स्तुति के लाभ भी बतला दिये। ईश्वर की स्तुति करना हम मनुष्यों का प्रथम कर्तव्य नैतिक दायित्व बन जाता है। सृष्टिकर्ता परमपिता परमेश्वर ने हम सभी मनुष्यों के उपयोग एवं उपभोग के लिए ही इस समस्त प्रकृति और इसके ऐश्वर्यों की रचना की है और हम मनुष्य अपने पूरे जीवन ईश्वर प्रदत्त ऐश्वर्यों का दोहन करते हैं हमें प्राण वायु, सूर्य की रोशनी उष्मा, खाने के लिए विविध प्रकार की वनस्पति, धरती माता के गर्भ से निकले खनिज पदार्थ आदि हर वस्तु परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत्त ही तो है। इस पर भी यदि हम उस सृष्टिकर्ता पालनकर्ता परमपिता की स्तुति नहीं करते तो निश्चित रूप से हम कृतघ्नता दोष के भागी बनेंगे। वैसे भी लौकिक जीवन में यदि गर्मी के मौसम में प्यास लगने पर कोई एक लोटा शीतल जल पिला दे तो हम उसका धन्यवाद अवश्य करते हैं और वहीं दूसरी ओर ईश्वर जिसने हमें जीवन और जीवन में उपयोग की समस्त सामग्री दी उसकी स्तुति करना हम जरूरी नहीं समझते।

ईश्वर की स्तुति करने से अनेकों प्रत्यक्ष लाभ स्पष्ट दिखाई देते हैं। ईश्वर की स्तुति करते समय हम जिन ईश्वरीय गुणों की चर्चा करते हैं उन गुणों की अपने जीवन में ग्राहयता को बढ़ाते हैं। ईश्वरीय गुणों को गाते समय जब हम कहते हैं कि ईश्वर दयालु है तो दया का भाव हमारे जीवन में भी आए ऐसी अपेक्षा रखते हैं और हम भी अपने साथियों सहयोगियों या अपने ऊपर आश्रितों पर दया का भाव दिखायें। हमने ईश्वर को न्यायकारी कहा तो अपने जीवन में अपने पद पर बैठ कर हम भी इस गुण का पालन करें अर्थात किसी भी स्वार्थ की भावना के वशीभूत हम न्याय आचरण को कदापि नहीं त्यागें। ईश्वर स्तुति करते हुए हम भी ईश्वर प्रदत्त वेदज्ञान का स्वाध्याय करते हुए अपने ज्ञान में वृद्धि करने का प्रयास करें। इस प्रकार की ईश्वरीय गुणों की स्तुति सगुण स्तुति कहलाती है। अब यदि हम रोजाना केवल ईश्वरीय गुणों को गा लें लेकिन इन गुणों का समावेश अपने जीवन में ना करें तो हमारी स्थिति उस जड़ टेपरिकार्डर सरीखी हो जायेगी जो केवल बज सकता है। अत: स्तुति करते समय जिन ईश्वरीय गुणों को हम याद करें उनको अपने जीवन में धारण करने का प्रयास पुरूषार्थ भी अवश्य करें।

ईश्वरीय गुणों की स्तुति से हमारी ईश्वर के प्रति प्रीति बढ़ती है। ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को जान मान कर हम गुणगान करते हैं और उन्हें अपने जीवन में धारण करने का पुरूषार्थ करते हैं तो निश्चित रूप से हमारी प्रीति उस परमपिता परमेश्वर से बढ़ती है और हम अपने जीवन को ईश्वरीय पारस के संसर्ग से उन्नत कर सकते हैं। ईश्वरीय गुणों के गुणगान से हमारे अंदर निराभिमानता आती है अर्थात् हमारे झूठे अहंकार का भाव समाप्त हो जाता है क्योंकि हम परमपिता परमेश्वर को सर्वश्रेष्ठ जान मान कर समर्पण भाव से स्तुति गान करते हैं। ईश्वर की स्तुति करने से हमारी आत्मा में आद्रता का भाव उत्पन्न होता है जो गुणों की ग्राहयता को बढ़ाता है।

इस प्रकार हमें सदा दैनिक नित्य कर्म के रूप में ईश्वर की स्तुति अवश्य करनी चाहिये।

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।